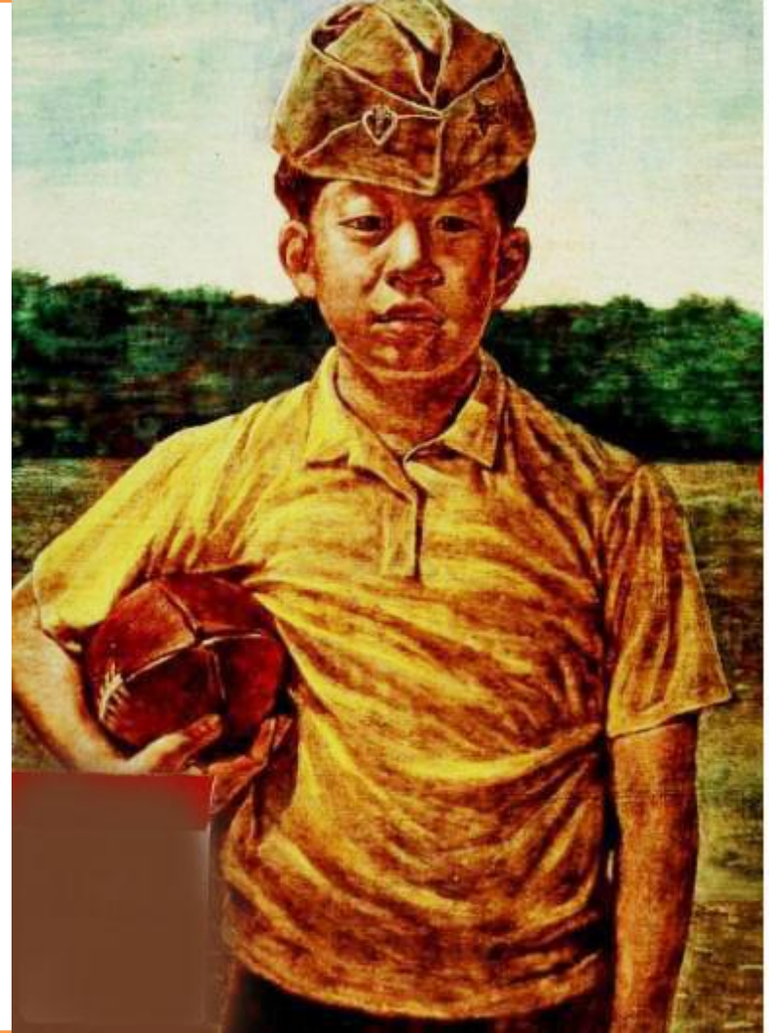

# शूरवीर

मेरे पिता हर दिन मुझे गाड़ी में स्कूल ले जाते थे, पर मैं चाहता था कि वह ऐसा न किया करें. ऐसा इसलिए था कि जो बच्चे पैदल चल कर स्कूल जाते थे वह हमेशा मुझे घूर कर देखते थे. इनमें से कुछ बच्चे मेरी ओर इशारा करते थे और कुछ बच्चे अपनी उँगलियों को बंदूकों की तरह तान कर मुझ पर निशाना लगाते थे.

“सब हमें बुरा क्यों समझते हैं?” मैंने पिता से पूछा.

“ऐसा सिर्फ फिल्मों में होता है,” उन्होंने उत्तर दिया.

फिर भी कभी-कभी मैं उन्हें स्कूल से दूर ही गाड़ी से उतारने के लिए मना ही लेता था.

स्कूल बंद होने के बाद मैं अपने मित्रों से मिलता था. मैं उन्हें फुटबॉल खेलने के लिए कहता पर उन्हें तो बस युद्ध का खेल खेलना ही पसंद था क्योंकि उनके पास लड़ने के लिए एक शत्रु था, वह शत्रु मैं था. टोरी के पास कई प्रकार की टॉय-गन्स थीं. इन बंदूकों को सड़क के अंत पर स्थित जंगल में लाने में रेग्गी और ज़ैक उसकी सहायता करते थे. मैं भी उनसे वहीं मिलता था.

ज़ैक कभी-कभी अपने पिता की कोई चीज़ साथ ले आता था. युद्ध में ली गयी अपने पिता की तस्वीरें या उनके मैडल वह लाकर हमें दिखाता था. “वह एक शूरवीर योद्धा थे,” ज़ैक ने कहा और फिर उसने दुबारा कहा कि लड़ाई के खेल में हर बार मुझे शत्रु क्यों बनना पड़ता था, क्योंकि मैं शत्रु जैसा ही दिखता था.

“चलो भागो, डोनी,” ज़ैक ने आदेश सा दिया. “तुम बुरे आदमी हो और तुम्हारा पीछा कर के हम तुम्हें पकड़ लेंगे.”

“नहीं, मैं बुरा आदमी नहीं बनूंगा,” मैंने विरोध किया. “मेरे पिता हमारी सेना में थे और उन्होंने इटली और फ्रांस में लड़ाइयाँ लड़ी थीं. और मेरे चाचा भी कोरिया में लड़े थे.”

“असंभव!” ज़ैक ने कहा.

“तुम्हारे पिता और चाचा हमारी सेना में कैसे हो सकते हैं?” टोरी ने पूछा.

“हाँ,” रेग्गी सहमत था, “हमारी सेना में तुम जैसा दिखने वाला कोई नहीं था. अगर तुम अपनी बात को सत्य प्रमाणित नहीं कर सकते तो छिपने के लिये तुम तुरंत भागना शुरू कर दो, डोनी.”

मैं इस बात को प्रमाणित नहीं कर सकता था, इस कारण खेल में मुझे फिर बुरा आदमी बनना पडा था. मुझे इस बात से घृणा थी. फिर भी सब मित्रों को खो देने से तो यही अच्छा था कि खेल में मैं बुरा आदमी बन जाऊं.

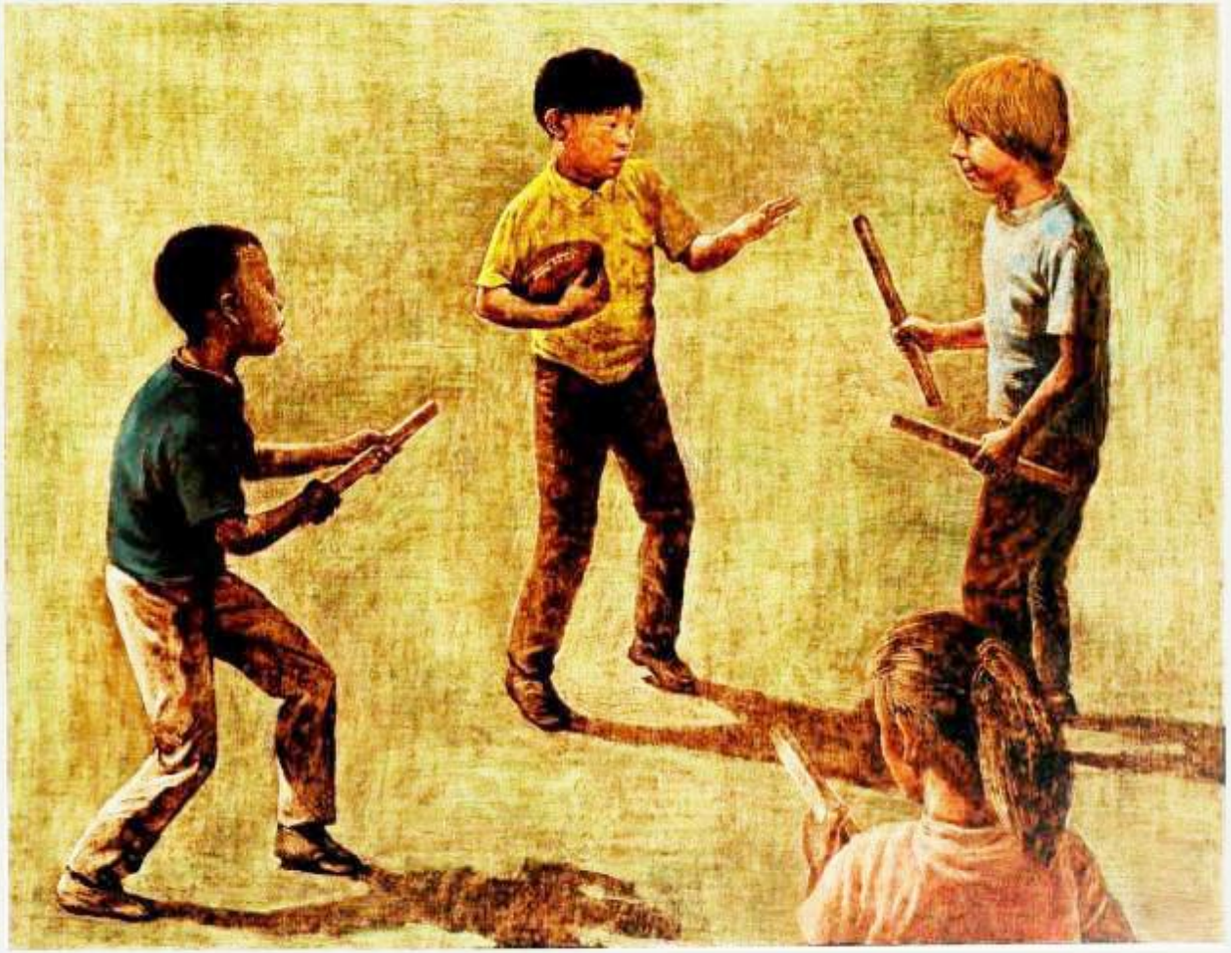

लेकिन मैं जानता था कि मेरे पिता ऐसी कई कहानियाँ सुना सकते थे जिन से प्रमाणित होता कि वह एक शूरवीर योद्धा थे. मैंने कई बार गैस स्टेशन पर उन्हें अपने दोस्तों से ऐसी बातें करते सुना था. मैंने शायद सौ बार उनसे कहा था कि मुझे अपने युद्ध की कहानियाँ सुनाएँ पर हर बार उन्होंने मेरी बात को टाल दिया था.

एक बार तो मैंने अपने पिता की सेना की टोपी से मैडल उतारने का प्रयास भी किया था ताकि वह मैडल मैं अपने मित्रों को दिखा पाऊं. लेकिन इस बात के लिए डांट ही खानी पड़ी थी. जब मैंने यह कहा कि यह प्रमाणित करने के लिए कि वह एक शूरवीर योद्धा थे, मुझे कुछ चाहिये तो उन्होंने बस इतना कहा, “तुम बच्चों को लड़ाई के बजाय दूसरे खेल खेलने चाहियें.”

योश चाचा भी वैसे थे. वह वर्कशॉप में हमारे पास बैठते थे, अपनी कॉफ़ी पीते थे लेकिन वह अधिक बातें न करते थे और कोरिया लड़ाई के विषय में तो कुछ भी न कहते थे. एक बार मैंने उनसे पूछा भी था.

“सच्चे शूरवीर डींगें नहीं मारते,” उन्होंने कहा था. “वह बस वही करते हैं जो उन्हें करना चाहिये.”

जब वह हमारे घर आते तो टीवी पर मेरा लड़ाई की फ़िल्में देखना उन्हें अच्छा न लगता था. इतना ही नहीं वियतनाम में चल रहे युद्ध का समाचार देखना भी उन्हें पसंद न था.

खेल में बुरा आदमी बनना मुझे बिलकुल अच्छा न लगता था. इस बात से मुझे इतनी घृणा थी कि एक दिन मैंने तय किया कि मैं ऐसी जगह छिप जाऊँगा जहां मेरे दोस्त मुझे ढूँढ न पायेंगे. मैं चुपचाप जंगल के भीतर चलता गया. पेड़ों के बीच यहाँ-वहाँ सूर्य की किरणें धरती पर पड़ रही थीं. जंगल के अंदर मैं वहाँ तक चल गया जहां तक मैं कभी नहीं गया था. सूर्य का प्रकाश मध्यम हो गया और जंगल में अँधेरा होने लगा. बस जूतों के नीचे चटकती डालियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी.

फिर झाड़ियों में किसी की सरसराहट की आवाज़ सुनाई दी. यह टोरी, ज़ैक या रेग्गी की आवाज़ नहीं थी. मैं डर गया. मैं जानता था कि मुझे लौटने का रास्ता ढूँढना पड़ेगा. लेकिन अगर मैं एक ही जगह गोल-गोल चलता रहा था तो? मैं एक चट्टान पर बैठ गया और सोचने लगा क्योंकि मैं जानता था कि ऐसी स्थिति में घबराना बिलकुल गलत होगा. शूरवीर कभी घबराते नहीं हैं. वह बस वही करते हैं जो उन्हें करना चाहिये.

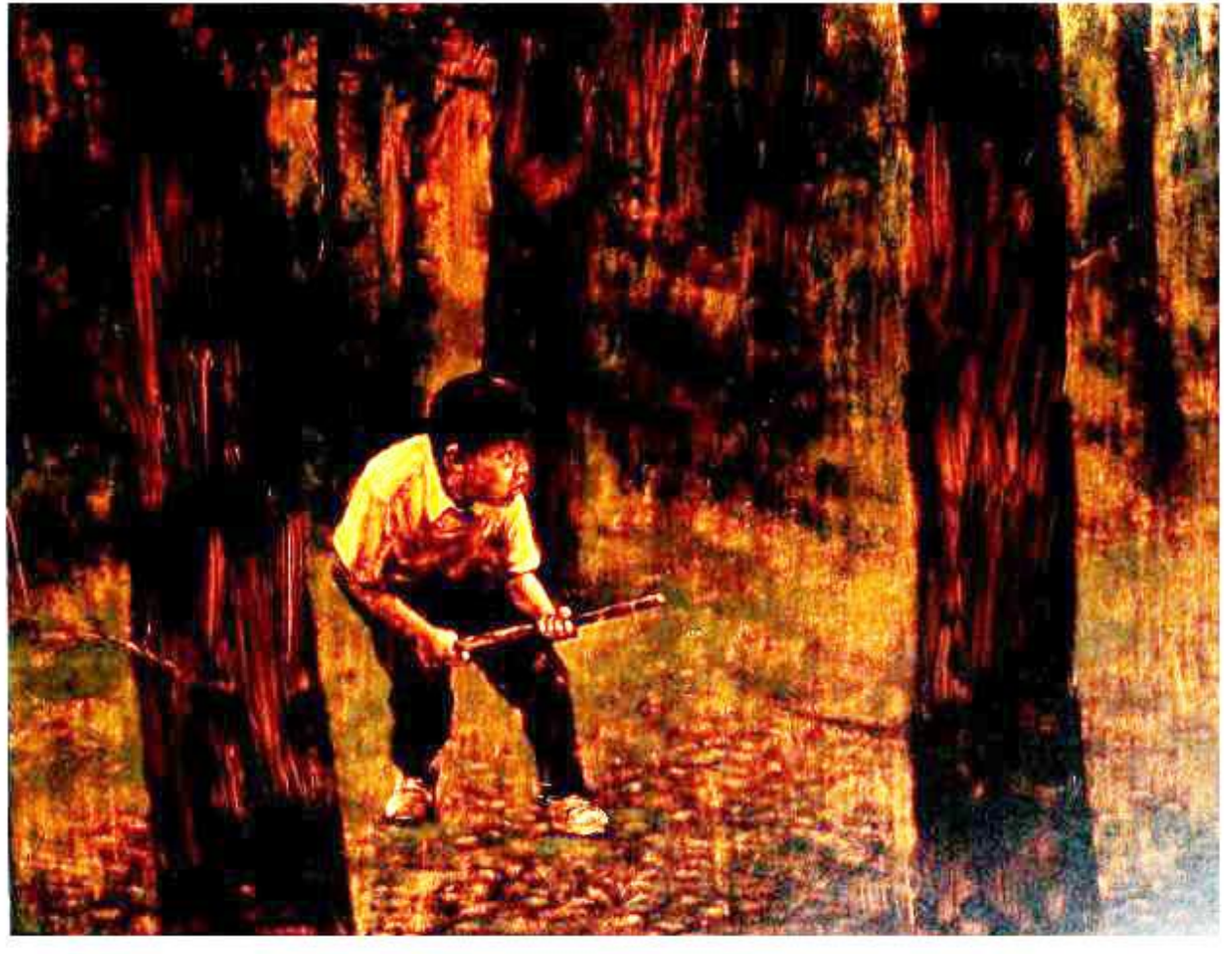

कैप्टेन डोनी ओकाडा के रूप में, बड़े विश्वास के साथ, मैं अपने सैनिकों को धीरे-धीरे, बिना घबराये, घने और अँधेरे जंगल से वहां ले आया जहां दूर सूर्य का प्रकाश दिखाई दे रहा था. मैं एक खुली जगह पहुँच गया. सूर्य का प्रकाश देख कर प्रसन्नता हुई.

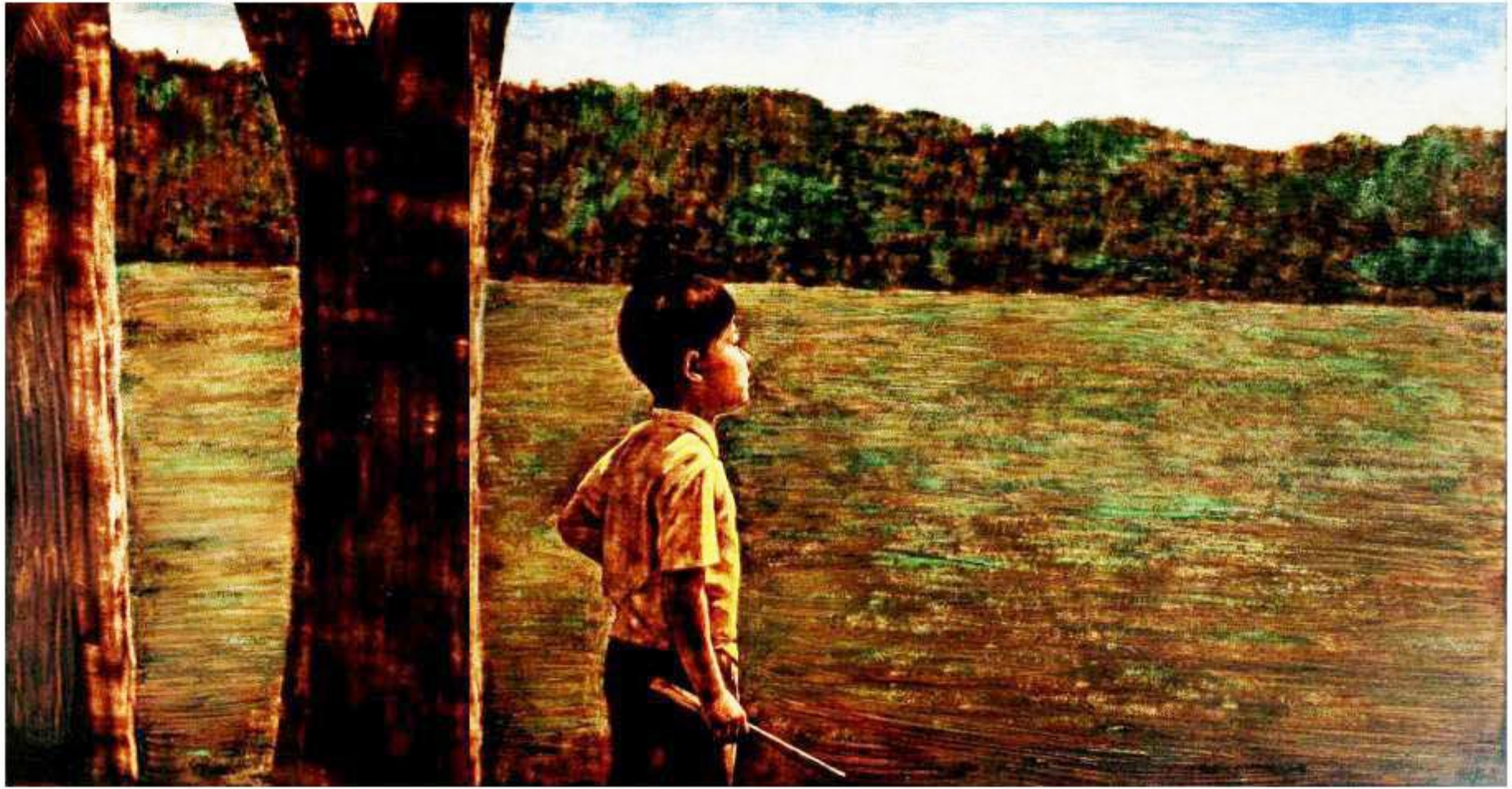

“पाव्!”

“हमने तुम्हें ढूँढ लिया, डोनी!”

उस खुली जगह में ज़ैक और रेग्गी मेरी ओर दौड़े आये. मैंने अपनी टॉय-गन फेंक दी और जंगल की ओर दौड़ पडा. एक पगडंडी पर नीचे की ओर दौड़ते हुए मैं ठोकर खाकर गिर गया और दूर तक फिसलता गया. और फिर उठ कर, जितनी तेज़ से भाग सकता था, मैं भागा.

वो लड़के तब तक मेरा पीछा करते रहे जब तक कि हम लोग मेरे पिता के गैस स्टेशन तक नहीं पहुँच गये-वह रुकने को तैयार ही न थे.

“ठाएँ-ठाएँ-ठाएँ-ठाएँ! पाव्! पाव्! पाव्! तुम मारे गये, डोनी!”

जिस कार को पिता और चाचा ठीक कर रहे थे उस कार के नीचे से योश चाचा झटपट बाहर आये. चाचा बहुत गुस्से में थे. पिता भी उठ खड़े हुए और देखने लगे कि क्या हो रहा था.

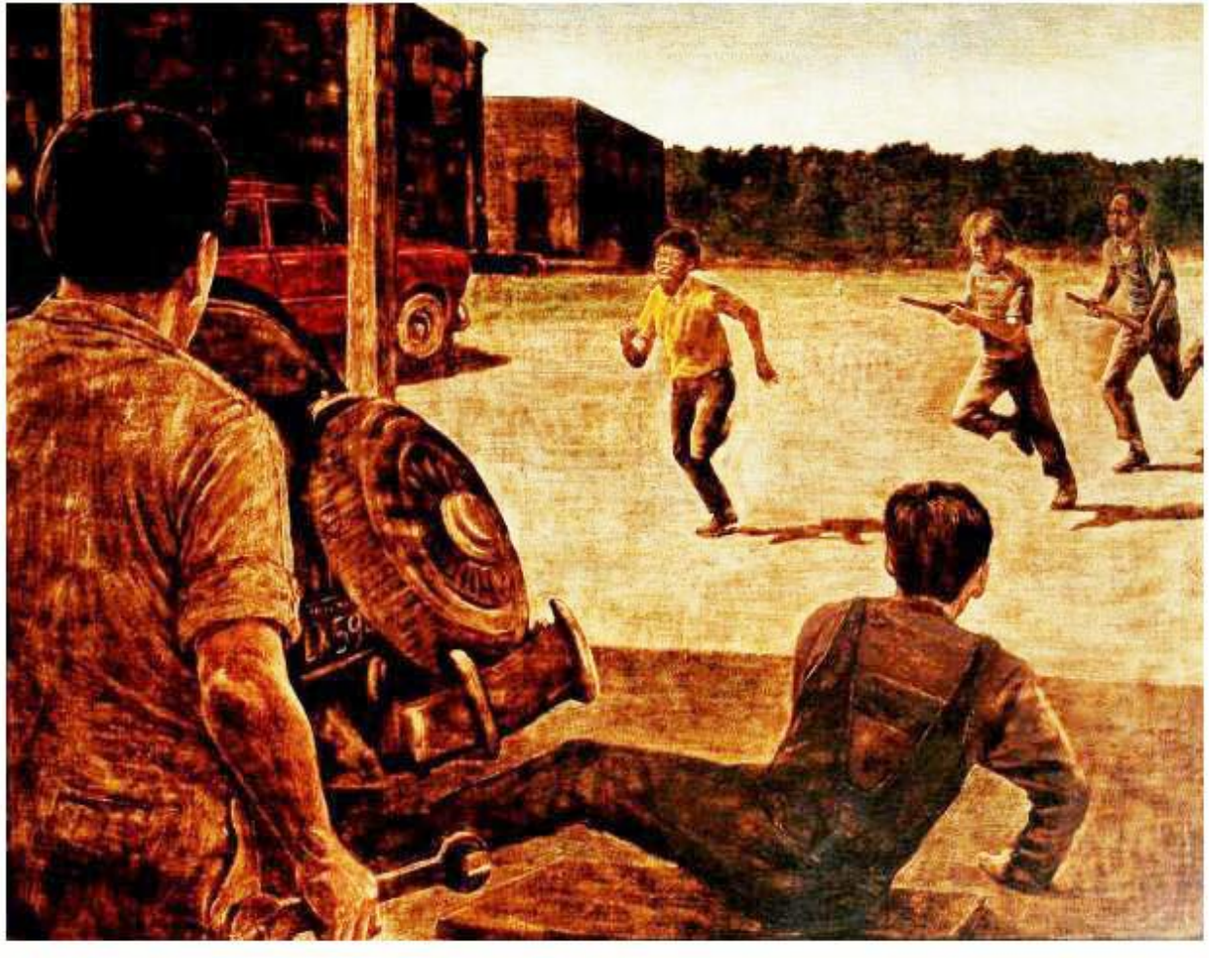

“मैं बुरा आदमी नहीं हूँ!” मैं चिल्लाया और भाग कर अपने पिता के पास आ गया. पिता ने मेरे कंधों को अपने हाथों से थाम लिया.

“चलो बच्चो,” उन्होंने कहा. “यह लड़ाई का खेल बहुत हो गया.”

योश चाचा ने टॉय-गन्स को घूर कर देखा और उनका क्रोध बढ़ गया.

“ओ, डोनी, तुम ने सारा खेल बिगाड़ दिया!” रेग्गी ने कहा.

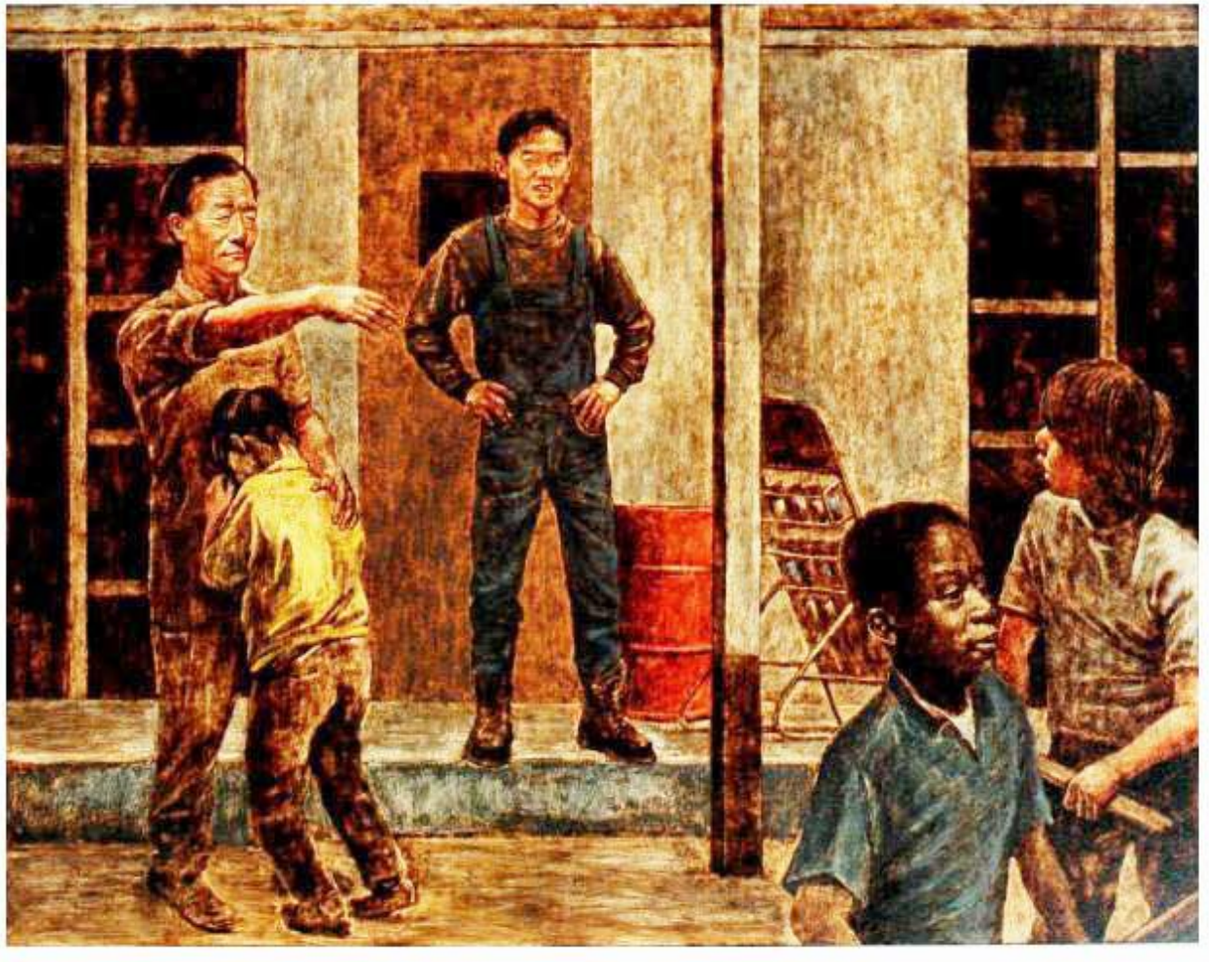

मैंने ऊपर पिता की ओर देखा. उनसे निवेदन करते समय मैं अपने आंसू मुश्किल से ही रोक पाया.

“क्या आप मुझे कुछ भी नहीं बता सकते? क्या आप मुझे उन लड़कों को कुछ भी बताने नहीं दे सकते? क्या हम भी शूरवीर नहीं हो सकते?”

मेरे पिता ने योश चाचा की ओर देखा. योश चाचा कुछ पल सोचते रहे  फिर उन्होंने सहमती में अपना सिर धीरे से हिलाया.

“कल हम तुम्हें स्कूल लेने आयेंगे,” मेरे पिता ने कहा.

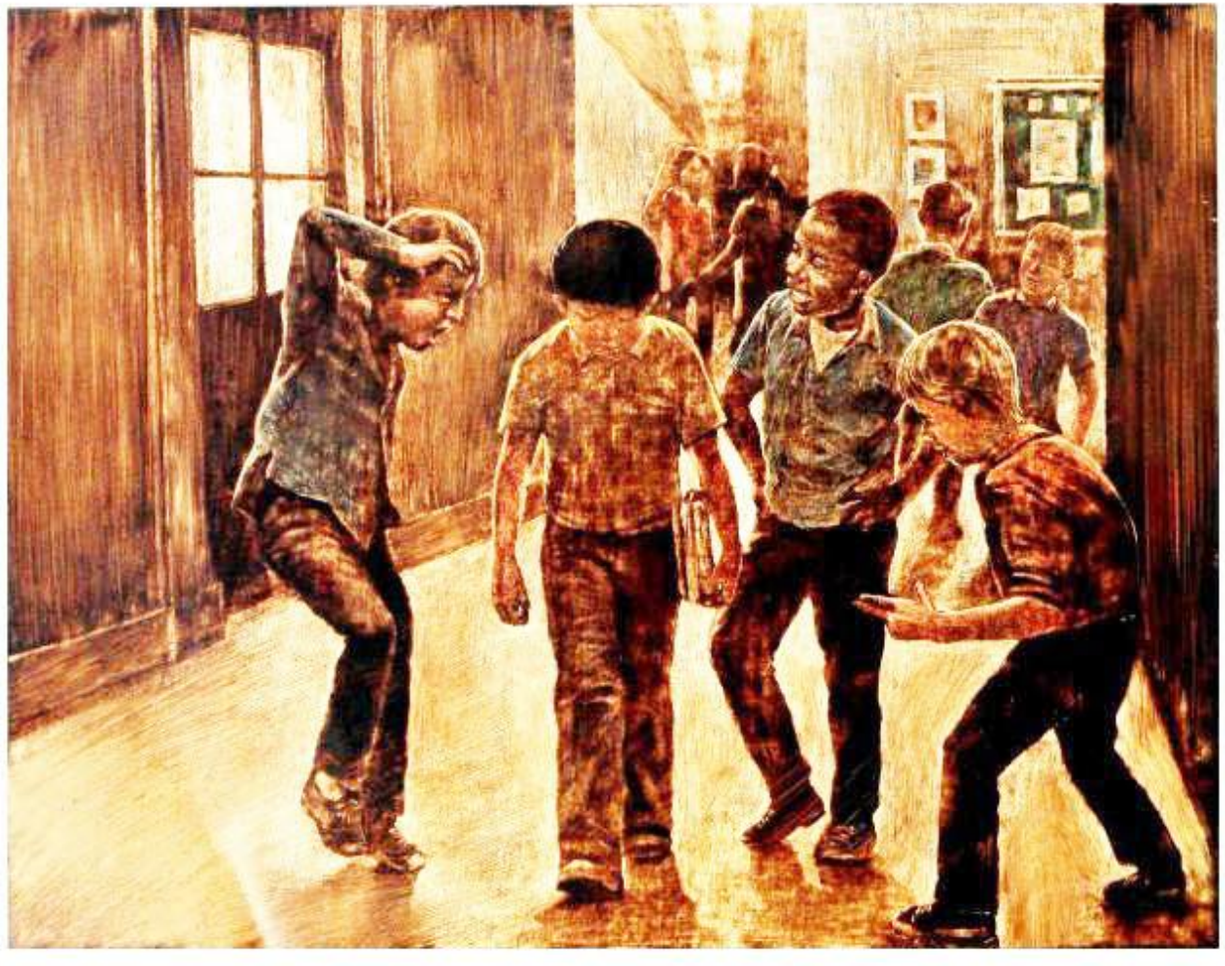

अगले दिन स्कूल में लड़के मुझे 'डरपोक' और 'पिता का लाड़ला' बुला कर चिढ़ाने लगे. आखिरकार स्कूल की घंटी बजी और मैं दरवाज़े की ओर चल दिया. मेरे सहपाठी एक साथ मेरे पीछे-पीछे आने लगे. "हे, डोनी!" कोई चिल्ला कर बोला. फिर उन सब ने बंदूक की तरह अपनी दो उंगलियाँ मेरी और तान दीं.

"ठाएँ-ठाएँ-ठाएँ! पाव्! पाव्!"

स्कूल में हर जगह वह मेरा पीछा करते रहे. मैं आशा कर रहा था कि अपने कथन अनुसार पिता और योश चाचा अवश्य आयेंगे.

स्कूल के बाहर सब लड़के खूब उत्तेजित थे और रास्ते के एक तरफ किसी की ओर संकेत कर रहे थे. मैंने उस और देखा और मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ.

अपने वर्कशॉप के कपड़े पहने, मेरे पिता अपने ट्रक के पास खड़े थे. लेकिन उन्होंने धूप का चश्मा और अपनी सेना की टोपी भी पहन रखी थी. टोपी पर मैडल लगे थे - जितने मैंने देखे थे उनसे अधिक मैडल थे. योश चाचा को देख कर तो विश्वास ही नहीं हुआ. उन्होंने ने भी अपनी अफसर की वर्दी और हैट के साथ धूप का चश्मा पहन रखा था. उनकी छाती पर लगे रंग-बिरंगे रिबन क्रेयॉन के एक खुले हुए क्रेयॉन के डिब्बे के ऊपरी सिरे जैसे लग रहे थे. उनके मैडल और पीतल के बटन धूप में चमक थे.

योश चाचा ने मेरा फुटबॉल अपने हाथ में पकड़ रखा था और जब भीड़ में उन्होंने मुझे देख लिया, वह ज़ोर से बोले, “हे, डोनी. पकड़ो!” उन्होंने बाल मेरी ओर घुमा कर फेंकी.

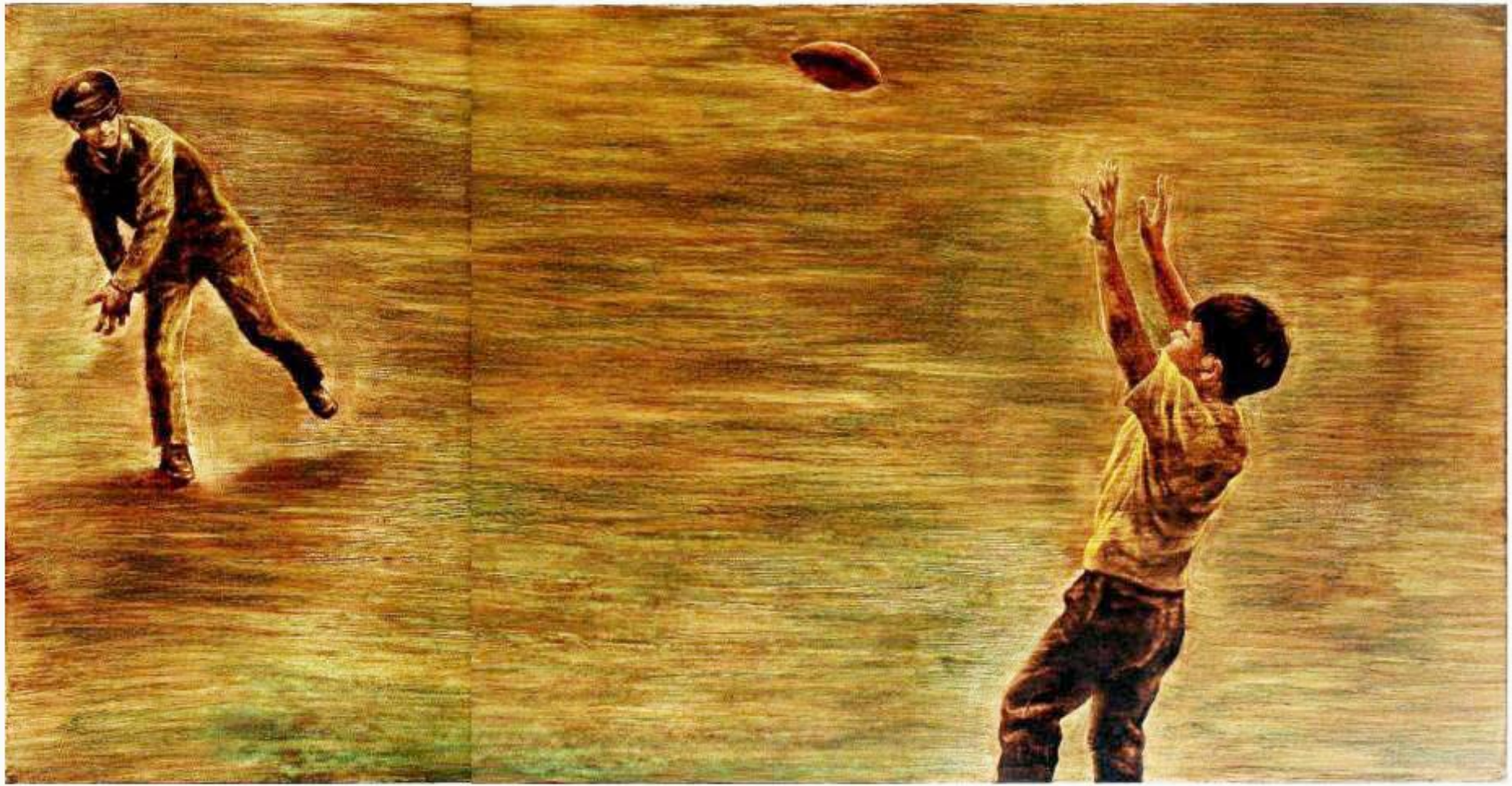

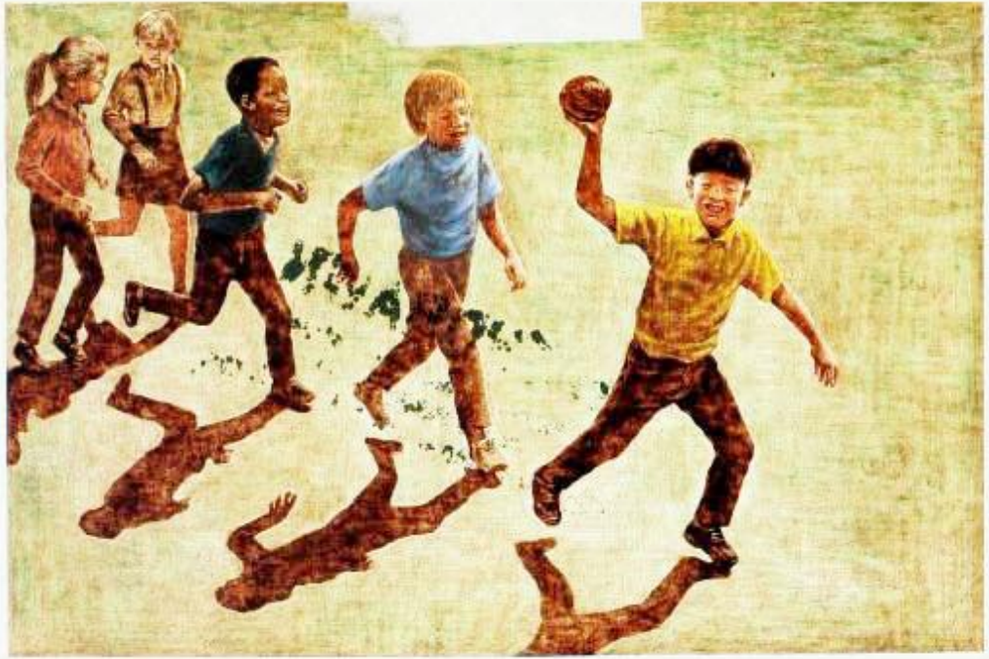

मुझे लगा कि वह गाड़ी में मुझे घर ले जाने के लिये आये थे. लेकिन यह देखने के लिए कि क्या मैं प्रसन्न था, वह दोनों कुछ देर वहीं रुक गये. फिर वह लौट गये. फुटबॉल लिए मैं वहीं खड़ा रहा.

“कौन खेलना चाहता है?” मैंने पूछा.

ज़ैक, रेग्गी और टोरी और कुछ अन्य लड़के मेरे साथ खेलना चाहते थे. हम खेल के मैदान की ओर दौड़ पड़े.

इस बार मेरा पीछा करने के बजाय वह लड़के मेरे साथ आ रहे थे.

समाप्त

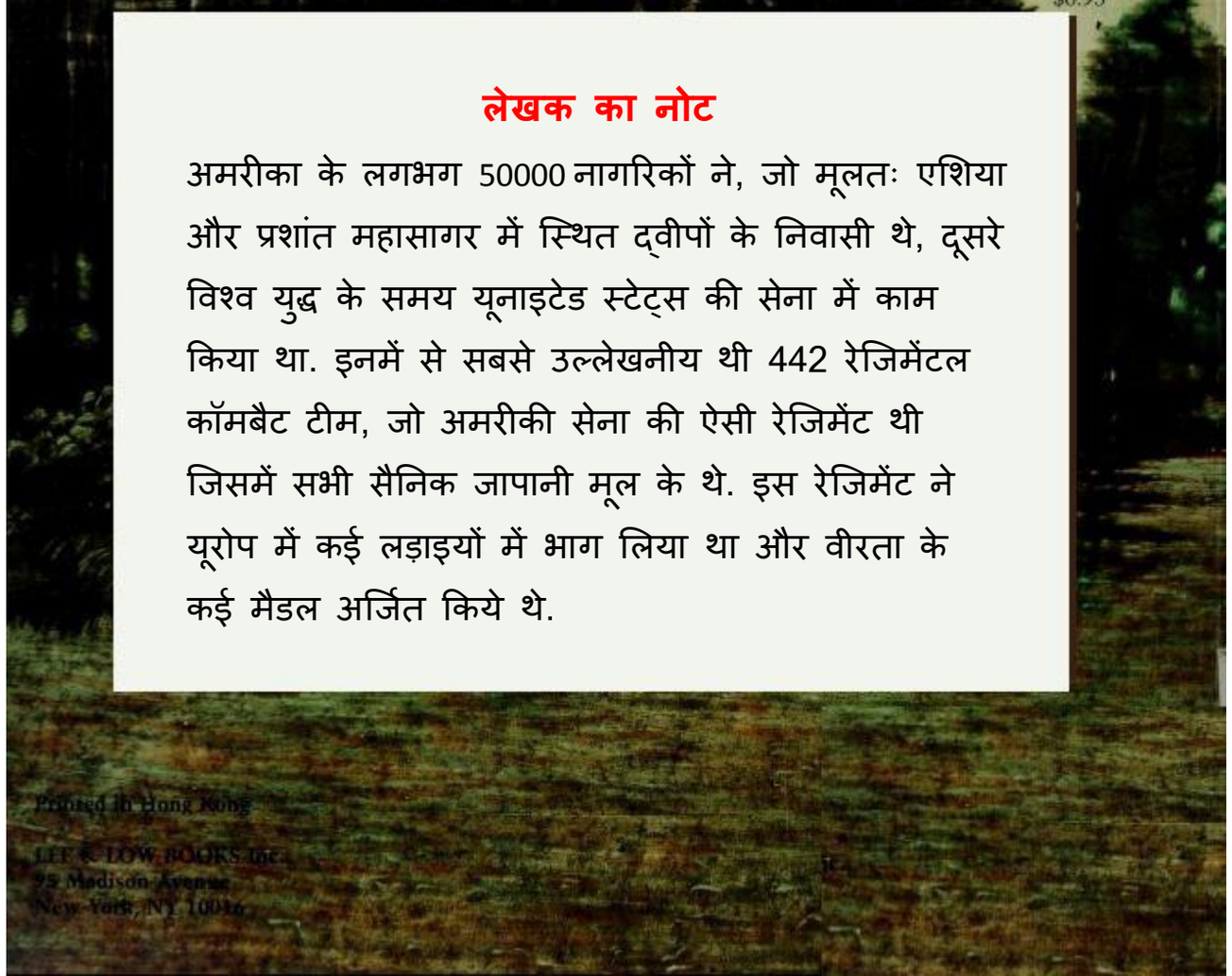


## लेखक का नोट

अमरीका के लगभग 50000 नागरिकों ने, जो मूलतः एशिया और प्रशांत महासागर में स्थित द्वीपों के निवासी थे, दूसरे विश्व युद्ध के समय यूनाइटेड स्टेट्स की सेना में काम किया था. इनमें से सबसे उल्लेखनीय थी 442 रेजिमेंटल कॉमबैट टीम, जो अमरीकी सेना की ऐसी रेजिमेंट थी जिसमें सभी सैनिक जापानी मूल के थे. इस रेजिमेंट ने यूरोप में कई लड़ाइयों में भाग लिया था और वीरता के कई मैडल अर्जित किये थे.